आमंत्रित अतिथि वक्ता

प्रो. बलवंत जानी, कुलाधिपति,
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
श्री अतुल कोठारी, सचिव
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास
प्रो. कपिल कपूर, पूर्व कुलाधिपति
महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा
प्रो. नंदकिशोर पाण्डेय, निदेशक
केन्द्रीय हिंदी संस्थान आगरा
प्रो. इंद्रनाथ चौधरी, नई दिल्ली
प्रो. चाँद किरण सलूजा, नई दिल्ली
प्रो. वृषभ जैन,
महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा
प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर
प्रो. सदानंद गुप्त, उप्र हिंदी संस्थान
प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी, भोपाल
प्रो. रवि टेकचंदानी, सिंधी अकादमी
प्रो. सुरेन्द्र दुबे, कुलपति
बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी

प्रो. अजय पटनायक, भुवनेश्वर
प्रो. नसीर अहमद खान, नई दिल्ली
प्रो. हरिराम मिश्र, जेएनयू, नई दिल्ली
प्रो. नीरजा टंडन, उत्तराखंड
प्रो. मिलनरानी जमातिया, त्रिपुरा
डॉ. चुकी भूटिया, सिक्किम
प्रो. ओमप्रकाश सिंह, जेएनयू, नई दिल्ली
प्रो. पुरुषोत्तम बिलिमलै, जेएनयू, नई दिल्ली
प्रो. चंदन चौबे, दिल्ली विश्वविद्यालय
प्रो. अवनिजेश अवस्थी, दिल्ली विश्वविद्यालय
प्रो. वीना बुदकी, मुंबई
प्रो. जयप्रकाश, चंडीगढ़
प्रो. हरमेन्द्र सिंह बेदी, पंजाब
प्रो. भास्कर ज्योति शर्मा, गुआहाटी
डॉ. आन्या तान्या, अरुणाचल प्रदेश
प्रो. राजनाथ भट, बी.एच.यू.
प्रो. ए. अच्युतन, केरल
प्रो. एम गोविंद राजन, तमिलनाडु

आयोजन समिति

संरक्षक
प्रो. राघवेन्द्र प्रसाद तिवारी
कुलपति
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

अधिष्ठाता
प्रो. निवेदिता मैत्रा
भाषा अध्ययन शाला

संयोजक
डॉ. विवेकानंद उपाध्याय
+91 94075 44839

विभागाध्यक्ष
प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी
हिन्दी विभाग

आयोजन सचिव
डॉ. अभिज्ञान द्विवेदी
+91 94799 83318

आयोजन सह-सचिव
डॉ. नौनिहाल गौतम

कार्यकारिणी सदस्य
डॉ. राजेन्द्र यादव, डॉ. कन्हैया त्रिपाठी, डॉ. आशुतोष मिश्र, डॉ. मनीष कुमार
डॉ. अबूशहीम खान, डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. किरण आर्य
डॉ. संजय यादव, डॉ. ममता सिंह

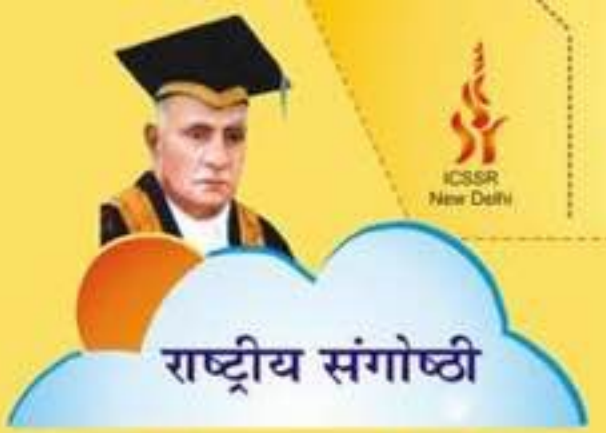

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय-भाषाओं की एकात्मता और वैज्ञानिकता

14-15 मार्च , 2018

भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
नई दिल्ली
एवं
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
द्वारा वित्तपोषित

अकादमिक सहयोग
भारतीय भाषा मंच

आयोजक
हिन्दी विभाग,
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

हमारा विश्वविद्यालय

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की स्थापना 16 जुलाई 1946 को डॉ. सर हरीसिंह गौर के द्वारा हुई। आरंभ में सागर विश्वविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध यह विश्वविद्यालय, 15 जनवरी 2009 को संसद के अधिनियम के कानून के द्वारा केन्द्रीय विश्वविद्यालय बन गया। वर्तमान में 11 संकायों और 37 विभागों से युक्त इस विश्वविद्यालय में एजुकेशन मल्टीमीडिया रिसर्च सेंटर और मानव संसाधन विकास केन्द्र भी है। इसके अतिरिक्त एक बेहतरीन पुस्तकालय, स्टेडियम, ऑडिटोरियम और लड़के-लड़कियों के लिए अलग-अलग छात्रावासों की सुविधा है। विश्वविद्यालय परिसर में बैंक, डाकघर और अस्पताल की सुविधा भी हैं।

हिन्दी विभाग

सागर विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग भारत के प्रतिष्ठित विभागों में से एक है। विश्वविद्यालय की स्थापना के साल ही इस विभाग की नींव रखी गयी। इसके संस्थापक विभागाध्यक्ष पं. आनन्दमोहन वाजपेयी थे। सौष्ठववादी आलोचना के जनक आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी जी का कार्यकाल हमारे हिन्दी विभाग व हिन्दी आलोचना के इतिहास में स्वर्णकाल के रूप में दर्ज है।

भारतीय भाषा मंच

भारतीय भाषा के आपसी रिश्ते को समझने एवं उनमे निहित 'एकता में अनेकता' के तत्त्व की पहचान करने और उसे समृद्ध करने हेतु इस मंच की स्थापना हुई। इस मंच के कुछ प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं: 1. केंद्र में हिंदी और राज्यों में उनकी राजभाषाओं के प्रयोग को बढ़ाने के लिए अभियान चलाना एवं जन-जागरण करना। 2. केंद्र और राज्यों की राजभाषा नीति और नियमों के अनुसार सरकारी काम-काज में हिंदी और प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग किये जाने के लिए सरकारों से आग्रह करना व आवश्यकता पड़ने पर दबाव बनाना, राजभाषा अधिनियमों और नियमों को कड़ाई से लागू कराना। 3. प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चशिक्षा में चिकित्सा और तकनीकी सहित सभी स्तरों पर शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएँ हों,इस दिशा में प्रयास करना। 4. विधि, न्याय और प्रशासन, सूचना प्रौद्योगिकी (ई.गवर्नेंस) डिजिटल इंडिया और ऑनलाइन सेवा आदि उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं के प्रयोग को बढ़ाना/बढ़वाना।

संगोष्ठी का उद्देश्य

विविधता भारतीय सभ्यता की स्वरूपगत विशेषता है और एकात्मता उसका स्थायी भाव। भारतीय भाषाएँ भले ही ऊपर से देखने में एक-दूसरे से भिन्न दिखाई दें लेकिन वे एक-दूसरे से बहुत गहराई से संलग्न हैं। इसी के साथ उनकी वैज्ञानिकता भी असंदिग्ध रूप से प्रमाणित और प्रकट है। परंतु उपनिवेशवाद ने भारत के सांस्कृतिक अधिष्ठान पर दो तरह से हमला किया। एक तो भारतीय भाषाओं को शिक्षा के माध्यम के रूप में बिलकुल बाहर कर दिया और भारतीय भाषाओं को एक दूसरे के विरुद्ध खड़ा करने की कोशिश की। इसके लिए आर्य- द्रविड़ नस्ल और भाषाओं के सिद्धांत की स्थापना कर और उनमें परस्पर विरोध को अकादमिक और बौद्धिक जामा पहनाने की कोशिश करके भारत की राष्ट्रीय एकता को भारी हानि पहुँचायी गयी। हिंदी-उर्दू विवाद भी इसी प्रक्रिया का एक नतीजा था। इसके अलावा बहुत से भारतीय बुद्धिजीवी भी इस कुप्रचार के शिकार हो गए। इस तरह उन्होंने अंग्रेजी साम्राज्यवाद द्वारा चलायी भाषा परिवारों की व्यवस्था को अपरिहार्य मान लिया। जिसके कारण एक सामान्य धारणा यह बनी कि भारत की भाषाएँ आपस में उत्पत्ति के स्तर पर ही भिन्न हैं। बाद के दिनों में लोगों ने इस विचार को स्वीकार कर लिया और अंग्रेजों की उस परियोजना को साकार करने में जाने-अनजाने में जुट गए। अलग-अलग कोनों में रहने तथा अलग-अलग भाषाएँ बोलने मात्र से हम अलग-अलग देश नहीं हो जाते हैं।

हमारी भाषाओं की ध्वनियों के वर्गीकरण, व्याकरण, पद निर्माण की पद्धति एवं शब्द संपदा में परस्पर द्वंद्व की बजाए परस्पर पूरकता का संबंध रहा है। उनकी इस एकता का आधार वैज्ञानिक है। फिर भी औपनिवेशिक बौद्धिकता के वातावरण में उन सूत्रों पर शोध तथा विचार-विमर्श नहीं हो पाया। इसलिए भारतीय भाषाओं के विविध पक्षों यथा कारक, पद-रचना, वाक्य-विन्यास, पद-क्रम, शब्द-संपदा एवं विभिन्न भाषाओं के सांस्कृतिक -साहित्यिक आधार और अधिष्ठान पर गहराई से विचार तथा शोध किया जाना समय की आवश्यकता है, जिससे हमारी भारतीय भाषाओं में विरोध के स्थान पर परस्पर पूरकता, एकात्मता और वैज्ञानिकता के सूत्र हमारे सामने स्पष्ट हों और हमारी भाषायी एकता का मार्ग प्रशस्त हो सके। अपनी मातृभाषा में शिक्षा पाना हर मनुष्य का स्वाभाविक अधिकार है। भारतीय छात्र आज इससे वंचित किए जा रहे हैं। भारतीय भाषाओं को एक-दूसरे के विरोध में खड़ा करने की जो राजनीति विकसित हुई है उसका रचनात्मक और अकादमिक प्रतिकार आवश्यक है। उपर्युक्त संगोष्ठी इस दिशा में एक ठोस एवं आवश्यक कदम है।

संगोष्ठी के प्रस्तावित उपविषय

- भारतीय भाषाओं की शब्द संपदा
- भारतीय भाषाओं में पद-निर्माण की पद्धति
- भारतीय भाषाओं की वाक्य-रचना
- भारतीय भाषाओं में कारक
- भारतीय साहित्य की सामान्य विशेषताएँ
- भारतीय भाषाओं की सांस्कृतिक निधि
- भारतीय भाषाओं में ज्ञान परंपरा लिखित और मौखिक या वाचिक
- भारतीय भाषाओं में ज्ञान-विज्ञान
- भारतीय भाषाओं की विदेश में स्थिति
- भारतीय भाषाओं की लोक परंपरा
- भारतीय भाषाओं में भाषा वैज्ञानिक चिंतन और चिंतक
- भारतीय भाषाओं का भविष्य
- भारतीय भाषाओं में शिक्षा: शिक्षण अधिगम
- भारतीय भाषाओं में अनुवाद
- भारतीय लिपियाँ
- भारतीय भाषाएँ और कम्प्यूटर तकनीक

शोध आलेख आमंत्रण

संगोष्ठी के विभिन्न उपविषयों के अन्तर्गत विद्यार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों से शोध पत्र आमंत्रित किये जाते हैं। शोध पत्र 3000 शब्दों में एमएस-वर्ड फार्मेट, यूनीकोड अथवा कृतिदेव 010, फॉन्ट साईज़ 14 में 28 फरवरी 2018 तक दिये गए ई-मेल sagarbhashaseminar2018@gmail.com पर भेजें। शोध पत्र की एक कॉपी अपने साथ लेकर आयें।

पंजीकरण शुल्क

शिक्षक : 400 रू. मात्र शोधार्थी : 200 रू. मात्र

नोट: पंजीकरण शुल्क संगोष्ठी स्थल पर लिये जाने की व्यवस्था रहेगी। आवास एवं यात्राभत्ता सिर्फ आमंत्रित अतिथियों को ही देय होगा। संगोष्ठी के संबंध में किसी अन्य जानकारी के लिए सर्वेश पाण्डेय +91 9452483702, आशीष कुमार सिंह +91 8871398584 से संपर्क कर सकते हैं।

विश्वविद्यालय कैसे पहुंचें

सागर मध्यप्रदेश राज्य का एक संभाग मुख्यालय है, जो रेल और सड़क मार्ग से भली-भांति जुड़ा हुआ है। सागर रेलवे स्टेशन बीना-कटनी मार्ग पर स्थित है। सागर रेलवे स्टेशन का कोड SGO है, यह बीना से 75 किमी, भोपाल से 200 किमी और जबलपुर से 200 किमी की दूरी पर स्थित है। यह सड़क मार्ग से भी भोपाल, जबलपुर, बीना, झांसी और खजुराहो से जुड़ा हुआ है। नजदीकी हवाई अड्डे भोपाल, खजुराहो और जबलपुर में हैं।